

रविवार 8 दिसंबर, 2024

विषय — ईश्वर ही एकमात्र कारण और निर्माता है

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 3: 19

"यहोवा ने पृथ्वी की नेव बुद्धि ही से डाली; और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया। "

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 8: 1, 3-6

- 1 हेयहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है! तू ने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।
- 3 जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं;
- 4 तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?
- 5 क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।
- 6 तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 147: 1 (से 1st);, 8, 11

- 1 याह की स्तुति करो! क्योंकि अपने परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है; क्योंकि वह मन भावना है, उसकी स्तुति करनी मन भावनी है।
- 8 वह आकाश को मेघों से छा देता है, और पृथ्वी के लिये मेंह की तैयारी करता है, और पहाड़ों पर घास उगाता है।
- 11 यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न होता है, अर्थात् उन से जो उसकी करुणा की आशा लगाए रहते हैं॥

2. सभोपदेशक 3: 1, 11 (से:), 14 (जो भी)

- 1 हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 11 उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता।
- 14 मैं जानता हूँ कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उस में कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि लोग उसका भय मानें।

3. 1 राजा 16: 29 (से), 30 (से भगवान)

- 29 यहूदा के राजा आसा के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल पर राज्य करने लगा।
- 30 और ओम्री के पुत्र अहाब ने उन सब से अधिक जो उस से पहिले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे।

4. 1 राजा 17: 1, 7-9, 10 (और जब) (से 4th), 11 (लाना), 12 (से), 13 (से), 14-16

- 1 और तिश्बी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियों में से था उसने अहाब से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।
- 7 कुछ दिनों के बाद उस देश में वर्षा न होने के कारण नाला सूख गया।
- 8 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
- 9 कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जा कर वहीं रह: सुन, मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है।
- 10 सो वह वहां से चल दिया, और सारपत को गया; नगर के फाटक के पास पहुंच कर उसने क्या देखा कि, एक विधवा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उसने कहा, किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ।
- 11 जब वह लेने जा रही थी, तो उसने उसे पुकार के कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ।
- 12 उसने कहा, तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए जाती हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊँ, और हम उसे खाएं, फिर मर जाएं।
- 13 एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर।
- 14 क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।
- 15 तब वह चली गई, और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे।
- 16 यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलिय्याह के द्वारा कहा था, न तो उस घड़े का मैदा चुका, और न उस कुप्पी का तेल घट गया।

5. 1 राजा 18: 1, 2, 41-45 (से 1st)

- 1 बहुत दिनों के बाद, तीसरे वर्ष में यहोवा का यह वचन एलिय्याह के पास पहुंचा, कि जा कर अपने अपप को अहाब को दिखा, और मैं भूमि पर मेंह बरसा दूंगा।
- 2 तब एलिय्याह अपने आप को अहाब को दिखाने गया। उस समय शोमरोन में अकाल भारी था।
- 41 फिर एलिय्याह ने अहाब से कहा, उठ कर खा पी, क्योंकि भारी वर्षा की सनसनाहट सुन पड़ती है।
- 42 तब अहाब खाने पीने चला गया, और एलिय्याह कर्म्मेल की चोटी पर चढ़ गया, और भूमि पर गिर कर अपना मुंह घुटनों के बीच किया।
- 43 और उसने अपने सेवक से कहा, चढ़कर समुद्र की ओर दृष्टि कर देख, तब उसने चढ़ कर देखा और लौट कर कहा, कुछ नहीं दीखता। एलिय्याह ने कहा, फिर सात बार जा।
- 44 सातवीं बार उसने कहा, देख समुद्र में से मनुष्य का हाथ सा एक छोटा बादल उठ रहा है। एलिय्याह ने कहा, अहाब के पास जा कर कह, कि रथ जुतवा कर नीचे जा, कहीं ऐसा न हो कि तू वर्षा के कारण रुक जाए।
- 45 थोड़ी ही देर में आकाश वायु से उड़ाई हुई घटाओं, और आन्धी से काला हो गया और भारी वर्षा होने लगी; और अहाब सवार हो कर यिजेर को चला।

6. 2 राजा 2: 1

- 1 जब यहोवा एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था, तब एलिय्याह और एलीशा दोनों संग संग गिलगाल से चले।

7. 2 राजा 4: 38-41

- 38 तब एलीशा गिलगाल को लौट गया। उस समय देश में अकाल था, और भविष्यद्वक्ताओं के चेले उसके साम्हने बैठे हुए थे, और उसने अपने सेवक से कहा, हण्डा चढ़ा कर भविष्यद्वक्ताओं के चेलों के लिये कुछ पका।
- 39 तब कोई मैदान में साग तोड़ने गया, और कोई जंगली लता पाकर अपनी अंक्वार भर इन्द्रायण तोड़ ले आया, और फांक फांक कर के पकने के लिये हण्डे में डाल दिया, और वे उसको न पहिचानते थे।
- 40 तब उन्होंने उन मनुष्यों के खाने के लिये हण्डे में से परोसा। खाते समय वे चिल्लाकर बोल उठे, हे परमेश्वर के भक्त हण्डे में माहुर है, और वे उस में से खा न सके।
- 41 तब एलीशा ने कहा, अच्छा, कुछ मैदा ले आओ, तब उसने उसे हण्डे में डाल कर कहा, उन लोगों के खाने के लिये परोस दे, फिर हण्डे में कुछ हानि की वस्तु न रही।

8. योएल 2: 23, 25 (से 1st), 26 (से 2nd), 27 (से:), 30 (से 1st), 32

- 23 हे सिय्योनियों, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो, और आनन्द करो; क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा, अर्थात् बरसात की पहिली वर्षा बहुतायत से देगा; और पहिले के समान अगली और पिछली वर्षा को भी बरसाएगा॥
- 25 और जिन वर्षों की उपज अर्बे नाम टिड्डियों, और येलेक, और हासील ने, और गाजाम नाम टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने जिस को मैं ने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर दूंगा॥
- 26 तुम पेट भरकर खाओगे, और तृप्त होगे, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम की स्तुति करोगे, जिसने तुम्हारे लिये आश्चर्य के काम किए हैं। और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी।
- 27 तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल के बीच में हूँ, और मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ और कोई दूसरा नहीं है। और मेरी प्रजा की आशा फिर कभी न टूटेगी॥
- 30 और मैं आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार, अर्थात् लोहू और आग और धूएँ के खम्भे दिखाऊंगा।
- 32 उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में जिन बचे हुएों को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएंगे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 331: 16-17, 18 (वह)-24

भगवान के ब्रह्मांड में सब कुछ उसे व्यक्त करता है।

वह दिव्य सिद्धांत है, प्रेम, सार्वभौमिक कारण, एकमात्र निर्माता, और कोई अन्य आत्म-अस्तित्व नहीं है। वह सर्व-समावेशी है, और वास्तविक और शाश्वत और अन्य कुछ भी नहीं है। वह सभी जगह भरता है, और अनंत आत्मा या मन को छोड़कर ऐसी सर्वव्यापीता और वैयक्तिकता की कल्पना करना असंभव है।

2. 102: 13 (आदमी)-15

... मनुष्य, जो परमेश्वर की सामर्थ को प्रतिबिम्बित करता है, सारी पृथ्वी और उसकी सेना पर प्रभुता करता है।

3. 139: 4-8

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया।

4. 114: 23-24, 27-29

क्रिश्चियन साइंस मानसिक के रूप में सभी कारणों और प्रभाव को बताता है, शारीरिक नहीं। ... दिव्य विज्ञान में, मनुष्य सहित ब्रह्मांड, आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है।

5. 209: 16-24

पृथ्वी की रचना करने वाले यौगिक खनिज या एकत्रित पदार्थ, जो संबंध घटक सामग्री एक दूसरे के साथ रखते हैं, आकाशीय पिंडों की परिमाण, दूरी और क्रांतियाँ, कोई वास्तविक महत्व नहीं हैं, जब हमें याद आता है कि उन सभी को आध्यात्मिक तथ्य को मनुष्य और ब्रह्माण्ड के अनुवाद द्वारा आत्मा में स्थान देना चाहिए। इसके अनुपात में, मनुष्य और ब्रह्माण्ड सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत पाए जाएंगे।

6. 257: 15-21

भौतिक इंद्रियां और मानव अवधारणाएं आध्यात्मिक विचारों को भौतिक विश्वासों में अनुवादित करेंगी, और कहेंगे कि मानव सिद्धांत, अनंत सिद्धांत के बजाय, ईश्वर, दूसरे शब्दों में, दिव्य प्रेम, - बारिश का जनक है, "जो बूंदों की भीख मांगता है ओस, "जो अपने मौसम में मजाज़रोथ को आगे लाता है," और अपने बेटों के साथ "आर्कटुरस" का मार्गदर्शन करता है।

7. 520: 23 (ईश्वर)-24 (से 2nd), 24 (वह)-1

ईश्वर सब कुछ मन से रचता है, पदार्थ से नहीं, ... पौधा बीज या मिट्टी के कारण नहीं बढ़ता, बल्कि इसलिए बढ़ता है क्योंकि विकास मन का शाश्वत आदेश है। नश्वर विचार जमीन में गिरता है, लेकिन अमर सृजनात्मक विचार ऊपर से आता है, नीचे से नहीं। क्योंकि मन ही सब कुछ बनाता है, अतः निम्न शक्ति द्वारा बनाने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहता। आत्मा मन के विज्ञान के माध्यम से कार्य करती है, मनुष्य को कभी भी जमीन जोतने के लिए प्रेरित नहीं करती, बल्कि उसे मिट्टी से श्रेष्ठ बनाती है।

8. 268: 6-2

एक भौतिक आधार पर विश्वास, जिसमें से सभी तर्कसंगतता को घटाया जा सकता है, धीरे-धीरे एक मेटाफिजिकल आधार के विचार से उपज रहा है, हर प्रभाव के कारण के रूप में माइंड से दूर की ओर देख रहा है। भौतिकवादी परिकल्पनाएं अंतिम संघर्ष में तत्वमीमांसा को चुनौती देती हैं। इस क्रांतिकारी काल में, गोफन लेकर चलने वाले चरवाहे बालक की तरह, स्त्री भी गोलियत से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ती है।

वर्चस्व के लिए इस अंतिम संघर्ष में, अर्ध-मेटाफिजिकल सिस्टम वैज्ञानिक तत्वमीमांसा को कोई पर्याप्त सहायता नहीं दे सकते हैं, क्योंकि उनके तर्क भौतिक इंद्रियों की झूठी गवाही के साथ-साथ मन के तथ्यों पर आधारित हैं। ये अर्ध-मेटाफिजिकल सिस्टम एक और सभी पैथेस्टिक हैं, और पांडेमोनियम का स्वाद, एक घर जो खुद के खिलाफ विभाजित है।

9. 547: 23 (वह)-30

शास्त्र बहुत पवित्र हैं। हमारा उद्देश्य उन्हें आध्यात्मिक रूप से समझना होगा, केवल इस समझ से सत्य को प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य सहित ब्रह्मांड का सही सिद्धांत भौतिक इतिहास में नहीं बल्कि आध्यात्मिक विकास में है। प्रेरित विचार ब्रह्मांड की एक सामग्री, कामुक, और नश्वर सिद्धांत को त्यागता है, और आध्यात्मिक और अमरता को अपनाता है।

10. 516: 12-21

निःस्वार्थ भाव से प्यार, सुंदरता और रोशनी में नहाया हुआ। हमारे पैरों के नीचे की घास चुपचाप बहती है, "नम्र पृथ्वी का वारिस होगा।" मामूली अर्बेटस उसकी प्यारी साँस को स्वर्ग भेज देता है। महान चट्टान छाया और आश्रय देती है। चर्च-गुंबद से सूरज की रोशनी, जेल-सेल में झलकती है, बीमार-कक्ष में घूमती है, फूल को रोशन करती है, परिदृश्य को सुशोभित करती है, पृथ्वी को आशीर्वाद देती है। मनुष्य, उसकी समानता में बना, उसके पास सभी पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रभुत्व को दर्शाता है।

11. 125: 21-30

मौसम समय और ज्वार, ठंड और गर्मी, अक्षांश और देशांतर के साथ आएं और जाएंगे। कृषक पाएंगे कि ये परिवर्तन उनकी फसलों को प्रभावित नहीं कर सकते हैं। "तू उसको वस्त्र की नाई बदलेगा, और वह तो बदल जाएगा।" समुद्र की मछलियों और हवा के झोंकों के ऊपर वायुमंडल और महान गहराई में जलयान का प्रभुत्व होगा। खगोलशास्त्री अब सितारों की ओर नहीं देखेंगे, - वह ब्रह्मांड पर उनसे नज़र रखेगा; और फूलवाला अपने फूल को उसके बीज से पहले पाएगा।

12. 14: 25-30

भौतिक समझ के विश्वास और सपने से पूरी तरह से अलग, आध्यात्मिक समझ और पूरी पृथ्वी पर मनुष्य के प्रभुत्व की चेतना को प्रकट करके, जीवन दिव्य है। यह समझ त्रुटि निकालती है और बीमारों को चंगा करता है, और इसके साथ आप "धिकारी की नान" बोल सकते हैं।

13. 96: 4-15

प्रेम अंत में सद्भाव के समय को चिह्नित करेगा, और आध्यात्मिकता का पालन करेगा, क्योंकि प्रेम आत्मा है। इससे पहले कि त्रुटि पूर्ण रूप से नष्ट हो जाए, सामान्य सामग्री की दिनचर्या में रुकावटें आएंगी। पृथ्वी नीरस और उजाड़ हो जाएगी, लेकिन गर्मी और सर्दी, बीज और फसल (हालांकि बदले हुए रूपों में), अंत तक जारी रहेगी, - जब तक कि सभी चीजों का अंतिम आध्यात्मिकरण नहीं हो जाता। "सबसे गहरा समय सुबह से पहले होता है।"

यह भौतिक दुनिया अब भी परस्पर विरोधी ताकतों के लिए अखाड़ा बन रही है। एक तरफ कलह और निराशा होगी; दूसरी तरफ विज्ञान और शांति होगी।

14. 97: 13-20, 26 ("वह")-28

निकटस्थ विश्वास एक ऐसी सच्चाई से गुजरता है, जो बिना सीमा के गुजरती है, जहाँ परमात्मा प्रेम से नष्ट हो जाता है, यह भ्रम होना भी बंद कर देता है, यह विनाश के लिए बनने वाला दुस्साहस है। यह विश्वास जितना अधिक भौतिक है, उतनी ही स्पष्ट इसकी त्रुटि है, जब तक कि दिव्य आत्मा, अपने क्षेत्र में सर्वोच्च नहीं है, सभी मामलों पर हावी है, और मनुष्य आत्मा, उसके मूल होने की समानता में पाया जाता है।

"वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई।" यह धर्मशास्त्र संकेत करता है कि आत्मा की सर्वोच्चता के सामने सभी पदार्थ लुप्त हो जायेंगे।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एडुई द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6